पर्वत से उतर कर माँ मेरे घर आ जाना

पर्वत से उतर कर मा मेरे घर आ जाना,
मैं भी भगत तेरा मेरा मान बड़ा जाना,

मैया तेरे बेटे को तेरा ही सहारा है
जब जब कष्ट पड़ा मैंने तुम्हे ही पुकारा है ...
अब देर करो न मैया दौड़ी दौड़ी आ जाना
पर्वत से उत्तर कर माँ मेरे घर आ जाना,
पर्वत से उतर कर माँ ...

न सेवा तेरी जानू न पूजा तेरी जानू
मैं तो हूँ अज्ञानी तेरी महिमा न जानू
मैं लाल तू मैया मेरी बस इतना ही जाना
पर्वत से उत्तर कर माँ मेरे घर आ जाना
पर्वत से उतर कर माँ ...

जब आओगी घर माँ मैं चरण पखारूँगा
करुणा की धूल तेरी मैं माथे से लगाऊंगा
मैं चरणों में शीश राखु तुम हाथ बढ़ जाना
पर्वत से उत्तर कर माँ मेरे घर आ जाना
पर्वत से उतर कर माँ ...

मैं रहता हूँ हर पल बस तेरे ही आभार
ये मांग रहा है विशाल बस थोड़ा सा प्यार
माँ अपने महेश को तू आ राह दिखा जाना
पर्वत से उत्तर कर माँ मेरे घर आ जाना
पर्वत से उतर कर माँ ...

https://www.bhajanganga.com/bhajan/lyrics/id/12168/title/parwat-se-utar-kar-maa-mere-ghar-aa-jana

अपने Android मोबाइल पर BhajanGanga App डाउनलोड करें और भजनों का आनंद ले |